दा'वत इलल्लाह की अहमियत और ज़रूरत

इख़्तितामी ख़िताब

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह तआला

जल्सा सालाना जर्मनी 2015 के अवसर पर

नाम किताब   दावत इलल्लाह की अहमियत और ज़रूरत

समापन भाषण हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम
अय्यदहुल्लाह तआला
(जल्सा सालाना जर्मनी 2015 ई. के अवसर पर)

अनुवादक   डॉ. अन्सार अहमद, एम.ए, एम.फिल, पीएच.डी., पी.जी.डी.टी., मौलवी फ़ाज़िल

Translator   Dr. Ansar Ahmad, M.A. M.PHIL, Ph.D, P.G.D.T., Moulvi Fazil

---

संख्या   2000

Quantity   2000

संस्करण   प्रथम, सितम्बर 2017

Edition   First, September 2017

प्रकाशक   शोबा नूरुल इस्लाम, क़ादियान 143516

Publisher   Shoba Noorul Islam Qadian
Distt- Gurdaspur, Punjab.

मुद्रक   फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान

Press   Fazle-Umar Printing Press, Qadian

ख़ुदा की तरफ बुलाने का महत्त्व एवं आवश्यकता

जर्मनी में कालसरोए के स्थान पर जल्सा सालाना जर्मनी 7 जून 2015 ई. के अवसर पर सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह का समापन भाषण

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۝ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۝ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ (अन्नहल - 126)

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ (हाम्मीम अस्सज्दह - 34)

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पिछले तीन चार वर्षों में जर्मनी में जमाअत अहमदिया के परिचय में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। तब्लीग़ यहां पहले भी की जाती थी। जर्मनी की जमाअत पहले भी तब्लीग़ के मैदान में काफी अच्छी कार्य कुशलता दिखाती रही है परन्तु जमाअत अहमदिया का परिचय हर वर्ग तक जो पिछले कुछ वर्षों में हुआ है इतना विशाल परिचय पहले न था। राजनीतिज्ञों में भी, पढ़े लिखे वर्ग में भी, जनता में भी जमाअत को पहले की अपेक्षा अधिक जाना जाता है। यही कारण है कि कुछ वर्गों तथा कुछ अख़बारों में हमारे विरुद्ध विरोधी अभियान भी चलाया गया और जमाअत को बदनाम करने की कोशिश की जाती है या की गई, परन्तु इसका इलाज भी ख़ुदा तआला ने उन्हीं लोगों के द्वारा कर दिया। उनके राजनीतिज्ञ, उनका पढ़ा-लिखा वर्ग, बल्कि ऐसे भी जिन का धर्म से कोई संबंध नहीं जमाअत के पक्ष में आवाज़ उठाते हैं। यह जर्मन लोगों की शराफ़त भी है, बल्कि कुछ स्थानों पर इस्लामी कानून एवं नियम और स्कूलों के सिलेबस (पाठयक्रम) के लिए जमाअत के मशवरों को महत्त्व भी दिया जाता है और जहां हम मस्जिदें बनाते हैं वहां आने वाले स्थानीय राजनीतिज्ञों तथा स्थानीय लोगों के द्वारा इन बातों की अभिव्यक्ति भी की जाती है तथा वे अपने विचारों में भी इन बातों को वर्णन करते हैं। और यह केवल और केवल ख़ुदा तआला की तरफ से चलाई जाने वाली हवा है। यह जो जमाअत का परिचय बढ़ा है उसको बढ़ाने में हमारे विरोधियों ने और अधिक भूमिका निभाई है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बार किसी के यह कहने पर कि हमारा क्षेत्र बहुत शान्तिपूर्ण है वहां कोई विरोध नहीं। फ़रमाया था — कि वास्तविक सन्देश तो वहां फैलता

है जहां विरोध हो।

अतः यूरोपीय देशों में विभिन्न माध्यमों से जमाअत के विरोध में पहला देश जर्मनी है। एक तरफ सब से अधिक स्थानीय लोग इस देश में हमारा समर्थन करने वाले हैं तो दूसरी ओर विरोध करने वाला वर्ग भी, चाहे वह कम ही हो अपने कार्य (विरोध) में तन्मय है। इस दृष्टि से जर्मनी के लोगों से आशा की जा सकती है कि इस्लाम की वास्तविकता को पहचानने वाली उनकी बहुसंख्या होगी, इन्शा अल्लाह।

इसलिए हमने यहां कोई राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त नहीं करना या केवल अपने हित के लिए उनको इस्तेमान नहीं करना बल्कि उनका धन्यवाद अदा करने का यह तरीका है कि उनको इस्लाम की विशेषताओं के बारे में निरन्तर बताते रहें। निस्सन्देह दिलों को खोलना अल्लाह तआला का काम है। सच्चे धर्म के हिदायत के मार्गों पर चलाना ख़ुदा तआला का काम है। परन्तु ख़ुदा तआला ने हम पर कुछ ज़िम्मेदारियां भी डाली हैं। हमें भी उन हिदायत के मार्गों की तरफ दुनिया का मार्ग-दर्शन करने की तरफ ध्यान दिलाया है। अतः एक तो अमन और प्रेम के लीफ़लेट्स (Leaflets) के द्वारा आप लोगों ने बड़े विशाल स्तर पर इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पहुँचाई है, परन्तु अब इस से आगे दुनिया को यह भी बताना है और जर्मनी भी इसमें शामिल है कि तुम्हारा वास्तविक निजात देने वाला जिसे अल्लाह तआला ने इस दुनिया में भेजा है वह हज़रत ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और अल्लाह तआला के आप से किए गए वादे के अनुसार अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की

वास्तविक शिक्षा को जारी रखने के लिए मसीह मौऊद-व-महदी मौऊद को भेजा है और अब अपनी दुनिया और आख़िरत संवारने के लिए इस से जुड़ने की कोशिश करो। इसलिए जिस प्रकार लाखों लोगों तक शान्ति के सन्देश के लीफ़लेट्स पहुँचे, अब इसी प्रकार लाखों और करोड़ों तक अल्लाह तआला की तरफ बुलाने के लिए भी लीफ़लेट्स पहुँचने चाहिए। हो सकता है इस से उस वर्ग में कुछ ऐसे लोग भी पैदा हो जाएँ जो इस समय हमारे हक़ (पक्ष) में बोलते हैं परन्तु बाद में विरोधी होने लग जाएँ। किन्तु इस से कोई अन्तर नहीं आता। यहाँ की बहुसंख्या शिक्षित है और हमारे इस सन्देश को भी समझती है कि धर्म के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं। हम ने किसी से झगड़ा नहीं करना। हम जिस बात को अच्छा समझते हैं उसे अपने दोस्तों तक पहुँचाना हमारा काम है और जैसा कि मैंने कहा यह एक ज़िम्मेदारी है जो हम पर डाली गई है।

ये आयतें जो मैंने तिलावत की हैं उनमें ख़ुदा की तरफ बुलाने के लिए ध्यान दिलाया है और फिर उपाय भी बताए कि किस प्रकार ख़ुदा की तरफ बुलाना है, और फिर यह भी कि ख़ुदा की तरफ बुलाने वालों की अपनी हालत कैसी होनी चाहिए।

इस पहली आयत का अनुवाद यह है कि अपने रब्ब के मार्ग की तरफ हिक्मत (समझदारी) और अच्छी नसीहत के साथ बुलाए और उन से तर्क के साथ बहस कर जो उत्तम हो। निस्सन्देह तेरा रब्ब ही उसे जो उसके मार्ग से भटक चुका हो सबसे अधिक जानता है और वह हिदायत पाने वालों का भी सब से अधिक ज्ञान रखता है।

और दूसरी आयत यह है कि और बात कहने में उस से अधिक उत्तम कौन हो सकता है जो अल्लाह की तरफ बुलाए और अच्छे

कर्म करे और कहे कि निस्सन्देह मैं पूर्ण आज्ञापालन करने वालों में से हूँ।

पहली आयत में फ़रमाया कि तब्लीग़ हिक्मत से करो। हिक्मत क्या है? हम सामान्य अर्थ बुद्धि और निपुणता के लेते हैं। सोच-समझ कर बात करो। इसके और भी अर्थ हैं। जैसे विद्या। जिसमें साइंस की विद्या भी है, अन्य विद्याएं भी हैं। फिर इन्साफ और बराबरी यह भी हिक्मत है। दूसरों की ग़लतियों को देखकर बर्दाश्त, हौसला, तथा हमदर्दी दिखाना। अपनी बात में दृढ़ होना, जो भी बात करें उस पर दृढ़ विश्वास होना चाहिए, यथास्थान एवं यथा अवसर सच्चाई का व्यक्त करना।

अतः इस दृष्टि से अल्लाह तआला की तरफ बुलाने वालों को भिन्न-भिन्न लोगों के स्वभाव के अनुसार भिन्न-भिन्न तरीकों से तब्लीग़ करनी होगी। हर एक को एक ही तरीके से सन्देश नहीं पहुँचाया जा सकता। कोई पढ़ा-लिखा है, कोई अपने धर्म के मामले में कट्टर है, कोई साइंस का तर्क चाहता है, कोई भावनात्मक तरीके से प्रभावित होता है, कोई शिष्टाचार देखकर प्रभावित होता है। निष्कर्ष यह कि तरीके भिन्न हैं। अतः जो ज्ञान और साइंस से प्रभावित होने वाला है, उसे हमें तर्कों और ज्ञान की दृष्टि से मनवाने की कोशिश, करनी होगी, भावनाएं वहां काम नहीं आएंगी। इसके लिए अपने ज्ञान में भी वृद्धि करनी चाहिए।

जब इन्साफ़ और बराबरी (समानता) को सामने रखते हुए तब्लीग़ करनी है तो फिर यह भी देखना है कि ऐसी बातें न हों जिनमें इन्साफ न हो और ऐसे ऐतराज़ न हों जो विरोधी अवसर पाकर हमें लौटाए। ग़ैर धर्म वाले इस्लाम पर ऐसे ही ऐतराज़ करते

रहे और करते हैं जो उन पर भी उलट जाते हैं। यही नहीं बल्कि मुसलमान आज जमाअत अहमदिया पर ऐसे ही ऐतराज़ करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ऐसे ऐतराज़ करते हैं जिन्हें यदि इन्साफ़ की दृष्टि से देखा जाए तो दूसरे नबियों पर भी पड़ते हैं। तो बहरहाल तब्लीग़ में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ऐसी बात न हो जो इन्साफ़ से खाली हो।

फिर तब्लीग़ के लिए यह भी याद रखना चाहिए कि धर्म की सुन्दरता-धैर्य और सहनशीलता से प्रस्तुत की जाए। हमने मुसलमानों को भी तब्लीग़ करनी है और ग़ैर मुस्लिमों को भी। अब यूरोप के देशों में लाखों की संख्या में मुसलमान विभिन्न देशों से आकर आबाद हुए हैं। ये भिन्न-भिन्न फ़िर्क़ों के लोग हैं। ऐसे भी हैं जो एक-दूसरे के विरुद्ध कट्टरता की भवनाएं रखते हैं बल्कि उन्हें काफ़िर तक कहते हैं, एक-दूसरे के विरुद्ध कुफ्र के फ़त्वे दिए जाते हैं। और इन कुफ्र के फ़त्वों के कारण क्या हैं? इस बात में मैं इस समय नहीं जाता। तो बहरहाल ये लोग केवल हम अहमदियों को ही काफ़िर नहीं कहते आपस में भी इनकी सिर फुटोल होती रहती है। कल ही यहां जब अरबों के साथ मुलाक़ात थी, चार-पांच सौ थे। उनमें से कुछ ग़ैर अहमदी भी थे, बल्कि अधिक संख्या ग़ैर अहमदियों की थी। मेरा विचार है कि आधे तो अवश्य होंगे। तो उनमें से एक ने कहा कि अमुक फ़िर्क़ा (सम्प्रदाय) सहाबा को काफ़िर कहता है आप क्या कहते हैं। मैंने उसे यही कहा कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो यही फ़रमाया कि मुसलमान को काफ़िर कहने वाले पर उसका कुफ्र उलट जाता है। (सही बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब मा यन्हा मिनस्सबाब वल्लअन, हदीस न०- 6045) परन्तु बार-बार

उन का ज़ोर था कि नहीं, तुम क्या कहते हो। मैंने उन्हें कहा कि आप स.अ.व. की बात के बाद और आप स.अ.अ. के फैसले के बाद मैं कौन होता हूँ और मेरे कहने की क्या आवश्यकता है।

बहरहाल तब्लीग़ के लिए यह आवश्यक है कि हिक्मत से उत्तर हो तथा बर्दाश्त और हमदर्दी का प्रदर्शन हो। बर्दाश्त (सहनशीलता) भी तब ही पैदा होती है जब हमदर्दी हो। और वास्तविक बर्दाश्त यही है कि मैंने किसी बड़ी बात की प्राप्ति के लिए छोटी-छोटी बातों को बर्दाश्त करना है और इस समय सब से बड़ी बात ख़ुदा तआला का सन्देश पहुँचाना है और इसके मुकाबले में ऐसी कोई बात भी नहीं जो रखी जा सके। इसके मुकाबले में हर बात छोटी है। और सब्र का प्रदर्शन करना है। हमें तो उन लोगों से भी हमदर्दी है जो केवल नाम के उलेमा के ग़लत दृष्टिकोणों (नज़रियात) के कारण उनके बहकाने में आकर महान सहाबा पर इल्ज़ाम लगाते हैं या उन के बारे में ग़लत बातें करते हैं। हमें इस हमदर्दी के कारण उन्हें सही मार्ग दिखाना है, उन्हें उन अवैध बातों से बुद्धि, प्रेम और प्यार द्वारा रोकना है। और यह काम सब्र और बर्दाश्त वाला है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब यह फ़रमाया था कि एक कलिमा पढ़ने वाले को काफ़िर कहने वाले पर इसके शब्द उलट जाते हैं तो यह तो नहीं फ़रमाया था कि उनकी गर्दनें उड़ा दो (काट दो), हरगिज़ नहीं। हमने तो काफ़िरों और अन्य धर्म वालों को भी तब्लीग़ करनी है और उन्हें इस्लाम की विशेषताओं से परिचित कराना है। इसलिए हमें न अपने तौर पर किसी पर कुफ्र के फ़त्वे लगाने की आवश्यकता है और न हम इस बात में ख़ुश हैं कि अमुक फ़िर्के ने अमुक फ़िर्के को काफ़िर

कहा है। ऐसे प्रश्न करने वालों या ऐसे विचार रखने वालों को भी सोचना चाहिए कि यदि किसी पर कुफ्र का फ़त्वा लगा दिया तो इस से इस्लाम की क्या सेवा होगी। इस्लाम की सेवा तो यह है कि चाहे राफ़िज़ी हों या कोई और हो उन्हें उनके ग़लत दृष्टिकोणों से, तर्कों द्वारा क़ायल करके वास्तविक मुसलमान बनाया जाए। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के अनुसार मुसलमान वह है जिसकी ज़बान से, हाथ से मुसलमान बल्कि हर इन्सान सुरक्षित रहे।

(सुननतिरमिज़ी किताबुल ईमान, बाब मा जाआ फ़ी इन्नलमुस्लिम, हदीस संख्या-2627)

अतः हमारा काम है कि अपनी ज़ुबान से भी और अपने हाथ से भी दूसरों को हानि पहुँचाने से हमेशा बचते रहें।

फिर हिक्मत में यह बात भी है कि हर बात मौक़ा और महल के अनुसार की जाए तथा ऐसी बातें न की जाएं जो शत्रु को भड़का दें और उसे क्रोधित कर दें तथा इस की बजाए कि तब्लीग़ अमन कायम करने का माध्यम हो उस से फसाद फैले और इस प्रकार धर्म पर ऐतराज़ करने वालों को हम स्वयं ऐतराज़ का अवसर उपलब्ध कर दें कि धर्म तो है ही फित्नः फसाद फैलाने वाला।

फिर यह भी आवश्यक है कि तब्लीग़ वास्तविकताओं एवं सच्चाई पर आधारित हो। कुछ लोग समझते हैं कि हम सच्चे धर्म की तरफ बुला रहे हैं तो निस्सन्देह वास्तविकताओं से हट कर बात कर दें। यह ग़लत विचार है। जब हिदायत देना अल्लाह तआला का काम है। जैसा कि उसने फ़रमाया तो फिर उस सच्चाई को वर्णन करें जिसे ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है। यह न हो कि दूसरों को हिदायत देते-देते स्वंय झूठ की बुराई में लिप्त हो जाएं। कुछ लोग घटनाओं

में अतिश्योक्ति कर जाते हैं (अर्थात् घटनाओं को बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करते हैं)।

हज़रत मुस्लिह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हो ने एक घटना वर्णन की कि एक दोस्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई वर्णन करने और आप के निशानों के बारे में बताने में भी अतिश्योक्ति कर जाते थे। एक दिन वह हज़रत मुस्लिह मौऊद के साथ थे तो एक अरब को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ ख़ुदा तआला के समर्थनों तथा निशानों का वर्णन करते हुए लेखराम के क़त्ल की घटना इस प्रकार वर्णन की कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भविष्यवाणी की कि अमुक दिन, अमुक समय लेखराम क़त्ल हो जाएगा और कोई उसे बचा न सकेगा। और फिर उस दिन और विशेष उसी निर्धारित समय में लेखराम को विशेष सुरक्षा में रखा गया। उस के घर के चारों ओर पुलिस ने पहरा लगा दिया। लोग घर के बाहर एकत्र हो गए कि कोई अन्दर न जा सके। घर के अन्दर भी उसकी सुरक्षा का प्रबंध किया गया। लेकिन इस सब के बावजूद एक फ़रिश्ता छत फाड़ कर आया और उसके पेट में चाकू घोंप कर चला गया और उसे क़त्ल कर दिया और किसी को दिखाई नहीं दिया तो वह अरब इस बात को सुन कर अल्लाहो अकबर, सुब्हान अल्लाह, माशा अल्लाह कहता रहा। हज़रत मुस्लिह मौऊद फ़रमाते हैं कि मैंने उसे कहा कि तुम झूठ और बढ़ा-चढ़ा कर बात वर्णन कर रहे हो। उसको वास्तविकता बताओ कि भविष्यवाणी के लिए यद्यपि दिन निर्धारित था कि ईद का दूसरा दिन, परन्तु छः वर्ष का समय था, यह नहीं था कि अगले महीने या अगले वर्ष या अमुक दिन और वह पूरी हो गई।

अन्यथा जिस प्रकार निर्धारित करके तुम बता रहे हो यह ग़लत है। मैं फिर इसे बताने लगा हूँ कि तुम ग़लत कर रहे हो। असल बात, वास्तविकता यह है। इस पर वह दोस्त हाथ जोड़ने लगे कि नहीं, अब मेरा अपमान न कराएं। हज़रत मुस्लिह मौऊद फ़रमाते हैं यदि उस समय उसका सुधार न किया जाता जो फिर शायद उसके द्वारा ही करवा दिया तो फिर आगे अरब ने जब वर्णन करना था तो उसने उसमें और अधिक अतिश्योक्ति करनी थी और कहना था कि ऐसा चमत्कार हुआ, सच्चाई का ऐसा निशान प्रकट हुआ कि पृथ्वी फटी और उसमें से फ़रिश्ते निकल आए और दीवारें फटीं और उसमें से फ़रिश्ते आ गए तथा उसको क़त्ल करके चले गए और फिर आगे जो कहानी बननी थी फिर पता नहीं क्या बननी थी।

(ख़ुतबात-ए-महमूद जिल्द-12, पृष्ठ 450-451 से उद्धृत)

इसी प्रकार धर्म के बारे में ग़लत बातें फैलती हैं और कुछ केवल नाम के बुज़ुर्गों के बारे में कहानियां सुनाई जाती हैं। यह ख़ुलासे के तौर पर मैंने अपने शब्दों में वर्णन किया है। बहरहाल किसी को क़ायल करने के लिए भी घटनाओं की सच्चाई को हमेशा सामने रखना चाहिए।

फिर हिक्मत का अभिप्राय नुबुव्वत का भी है अर्थात् तब्लीग़ उस माध्यम से करो जो नुबुव्वत का माध्यम है और मुसलमानों के लिए एक मुसलमान के लिए हमारे लिए यह माध्यम पवित्र क़ुर्आन है। अतः क़ुर्आन के तर्कों द्वारा दुनिया को विजय करने की कोशिश करनी चाहिए, न कि अपनी पसन्द के तर्कों से क़ायल करने की कोशिश की जाए। क़ुर्आन के तर्कों से कोशिश करेंगे तो फिर उन में वज़न (भार) भी होगा। यदि अपनी बात को सुदृढ़ करने की नीयत

से अनावश्यक ढकोसलों से तथा अपने तर्कों से काम लिया जाए तो उसका उल्टा प्रभाव होता है।

अतः यही एक हथियार है जिसके इस्तेमाल से हमारी विजय है कि हम पवित्र क़ुर्आन को हमेशा हाथ में रखें और जिसके इस्तेमाल से हम हर एक का मुँह बन्द कर सकते हैं और जिहाद के लिए भी यही हथियार है जिसे अल्लाह तआला ने इस्तेमाल करने का आदेश दिया था। हज़रत मुस्लिह मौऊद ने भी उस पर लिखा है — काश कि आज के मुसलमान यह समझ सकें तथा आजकल इस युग में हम मुसलमानों की जो हालत देखते हैं तो और अधिक कट्टर हो चुके हैं, इस बात को समझें और तलवार से दुनिया को विजय करने की बजाए, बन्दूक के ज़ोर पर शरीअत लागू करने की बजाए दिलों को इस सुन्दर शिक्षा से जीतने की कोशिश करें। परन्तु इस बारे में उनकी अक़्लों पर पर्दे पड़े हुए हैं और ये पर्दे उस समय उठेंगे जब युग के इमाम को मानेंगे। अतः आज यह हमारा काम है कि इस हथियार से दुनिया को घायल करते चले जाएँ। भिन्न-भिन्न अवसरों पर और यहां कल जर्मन और ग़ैर मुस्लिम मेहमानों के साथ जो सेशन था उस में भी मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुर्आन से जो जिहाद और अमन के बारे में इस्लामी शिक्षा प्रस्तुत की थी। इस पर कुछ मेहमानों ने अपनी अभिव्यक्तियाँ वर्णन कीं कि ये बातें सुनकर इस्लाम के बारे में हमारे विचार बिल्कुल बदल गए हैं और इसके अतिरिक्त भी विभिन्न अवसरों पर अक्सर मेहमानों ने अपने ऊपर पड़े प्रभावों को वर्णन किया और करते हैं कि हम जमाअत को जानते हैं और इस कारण से जिन अहमदियों से हमारा सम्पर्क हुआ है उन्होंने हमें इस्लाम की सुन्दर

शिक्षा बताई है। अतः यह शिक्षा बताना हम में से हर एक का काम है और शिक्षा वही है जो पवित्र क़ुर्आन ने हमें दी है।

फिर तब्लीग़ के लिए हिक्मत के शब्द में अल्लाह तआला ने हमें यह भी बताया कि ऐसे ढंग से बात की जाए जिसे दूसरा समझ सके। एक कम पढ़े-लिखे इन्सान के सामने यदि अपना ज्ञान बघारा जाए तो उसे कोई फ़ायदा नहीं देगा। ऐसी बात हो जो दूसरे के ग़लतफ़हमी को दूर करे और अज्ञानता को दूर करे। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी यही फ़रमाया है कि लोगों से उनकी समझ और ज्ञान के अनुसार बात किया करो।

(उम्दतुलक़ारी शरह सहीहुल बुख़ारी लेखक- इमाम बदरुद्दीन ऐनी रह., भाग-3, पृष्ठ-407, किताबुलहैज़, बाब तरकुल हैज़ अस्सौम शरह हदीस संख्या 304, बैरूत से प्रकाशित, सन् 2003)

यह बहुत महत्त्वपूर्ण बात है।

फिर फ़रमाया कि तब्लीग़ के लिए "मौइज़तिल हसनः" को भी सामने रखो। अर्थात् ऐसी बात जो दिलों को नर्म करने वाली हो और सुनने वाले के दिल पर गहरा प्रभाव डालने वाली हो। पवित्र क़ुर्आन हमें केवल खुश्क बातें प्रस्तुत करने के लिए नहीं कहता बल्कि ऐसा तरीका हो जो तार्किक होने के साथ-साथ भावनाओं को उभारने वाला भी हो और घटनात्मक भी हो, परन्तु फिर वही बात कि भावनाओं को उभारने के लिए अतिशयोक्ति न हो, बल्कि सच्चाई से काम लिया जाए। इस्लाम तो है ही सच्चाई का नाम। इसलिए कोई कारण नहीं कि हम सच्चाई से हटकर कोई और बात करें और तर्क ऐसा हो जो बुनियादी हो और उसके चारों ओर ही समस्त तर्क घूमते रहें। यह भी बहुत आवश्यक है। मुसलमानों को मसीह मौऊद के आने की बात

भी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुर्आन की सच्चाई के निशान के तौर पर प्रस्तुत की जाए। किसी को अपने अन्दर ज़बरदस्ती नहीं लाया जा सकता। हमारा काम तब्लीग़ करना है और हिदायत देना ख़ुदा तआला का काम है। वह अधिक अच्छा जानता है कि कौन हिदायत पाएगा। इसलिए हमारे ज़िम्मे जो काम लगाया गया है हमने वह करना है और इस बात को अल्लाह तआला ने सूरह हाम्मीम अस्सज्दह में वर्णन किया है जिसका अनुवाद मैंने पहले पढ़ भी दिया है कि "और बात कहने में उस से अच्छा और कौन हो सकता है जो अल्लाह तआला की तरफ बुलाए और नेक कर्म करे और कहे कि मैं निस्सन्देह पूर्ण आज्ञाकारियों में से हूँ।"

अल्लाह तआला फ़रमाता है तुम्हारे कामों में से सब से अच्छा काम और तुम्हारी बातों में से सब से अच्छी बात यह है कि तुम अल्लाह तआला के पैग़ाम (सन्देश) को सच्चाई, हिक्मत और मौइज़तिल हसनः के द्वारा दुनिया तक पहुँचाओ, क्योंकि ख़ुदा तआला को यही बात सबसे अधिक पसन्द है और अल्लाह तआला के इस आदेश पर अमल करने के कारण तुम भी ख़ुदा तआला के प्रिय बन जाओगे। अल्लाह तआला को जो बात सबसे अधिक पसन्द है वह यही है कि इन्सान शैतान के पंजे से निकल कर सही इबादत करने वाला और ख़ुदापरस्त बन जाए और इसका लाभ ख़ुदा तआला को नहीं बल्कि इन्सान को ही है। अल्लाह तआला कहता है — मुझे क्या अन्तर पड़ता है यदि तुम मेरी इबादत करते हो या नहीं करते। यद्यपि शैतान को भी ख़ुदा तआला ने खुली छूट दी हुई है कि बन्दों को बहकाने और ख़ुदा तआला से दूर करने में निस्सन्देह जो कोशिश करनी है करते रहो परन्तु नबियों के द्वारा हमारे मार्ग-दर्शन के भी

सामान कर दिए और फिर नबियों के मानने वालों को भी आदेश दिया कि नबियों के काम को तुम आगे बढ़ाओ और ख़ुदा की तरफ बुलाने के काम को भी कभी समाप्त न होने दो।

इसलिए इस युग में जहां शैतान या शैतानी ताकतें अपनी सम्पूर्ण शक्तियों के साथ दुनिया को शैतान की झोली में गिराना चाहती हैं वहां दूसरी तरफ ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत पर यह ज़िम्मेदारी डाली है कि दुनिया का हिदायत की तरफ मार्ग-दर्शन (रहनुमाई) करो और जैसा कि मैंने जुमा के ख़ुत्बे में भी कहा था कि इस बिगड़े हुए समय में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नई ज़मीन और नया आसमान बनाने के लिए भेजा था।

(तज़किरह संस्करण-4, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-20, पृष्ठ-375 हाशिया से उद्धृत)

और अब हम में से हर एक ने इस नई ज़मीन तथा नए आसमान को बनाने में अपनी भूमिका अदा करनी है और जहां अपने दिलों की ज़मीन समतल करके अल्लाह तआला की याद को आबाद करना है वहां दुनिया को नई ज़मीन और नए आसमान बनाने के उपाय भी सिखाने हैं। बहरहाल दुनिया में ये दो गिरोह हैं — एक शैतान के बहकाने में आने वाला और दूसरा ख़ुदा तआला की तरफ बुलाने वाला। आज सम्पूर्ण विश्व में जमाअत अहमदिया ही वह वास्तविक जमाअत है जो दुनिया को ख़ुदा तआला की तरफ बुलाने की वास्तविक भूमिका अदा कर रही है या कर सकती है और हमें इस जमाअत में शामिल करके अल्लाह तआला ने हम पर बड़ा उपकार किया है। इस उपकार का शुक्र (धन्यवाद) अदा करने के लिए हम में से हर एक को अपनी ज़िम्मेदारियों की अदायगी

की तरफ ध्यान देना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए तथा यह कोशिश करते हुए ख़ुदा की तरफ बुलाने के कर्त्तव्य को अदा करने की तरफ पहले से बढ़ कर आगे आना चाहिए। अल्लाह तआला के कलाम के बारीक से बारीक रहस्यों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सम्पूर्ण तर्कों के साथ खोलकर वर्णन किया और हमें एक ऐसा ख़ज़ाना प्रदान किया है जो समाप्त होने वाला नहीं है। अतः आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस पर अमल करते हुए कि जो चीज़ तुम अपने लिए पसन्द करते हो अपने भाई के लिए भी पसन्द करो।

(सही बुख़ारी किताबुल ईमान, बाब मिनलईमान अय्युहिब्बा लिअख़ीहे मा युहिब्बो लिनफ्सिही हदीस संख्या-13)

हमारा कर्त्तव्य है कि यह ख़ज़ाना जो पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा के ज्ञान और मारिफ़त से भरा हुआ है, मुसलमानों तक भी पहुँचाएं और ग़ैर मुस्लिमों तक भी पहुँचाएं और शैतान के चंगुल से निकाल कर उन्हें ख़ुदा तआला का सच्चा बन्दा बनाएं। उन्हें केवल नाम के उलेमा के पंजे से छुड़ाएं जो उन्हें अब इस युग के इमाम से दूर कर रहे हैं और इसके लिए ये लोग अपनी सम्पूर्ण शक्तियों को इस्तेमाल कर रहे हैं।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पिछले वर्षों की अपेक्षा यहां भी और दुनिया के हर देश में भी यह लहर चली है कि परिचय बढ़े हैं और लोग अहमदियत के करीब हो रहे हैं। विशाल स्तर पर अहमदियत को जाना जाता है तथा देशों के बड़े-बड़े शहरों में अहमदियत को लोग जानने लग गए हैं और इसमें मुसलमान और ग़ैर मुस्लिम सब शामिल हैं। परन्तु इसके लिए हमें भी अपनी हालतों का अमली नमूना बनाने के साथ उनके दिलों को फेरने के लिए दुआ का

हक़ अदा करने की कोशिश करनी चाहिए। हमारी हालतों को अच्छा होना भी आवश्यक है, क्योंकि इसके बिना हम हक़ अदा नहीं कर सकते। इसलिए इस तरफ भी ध्यान देने की अत्यन्त आवश्यकता है।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी उम्मत के लोगों के द्वारा किसी के हिदायत पाने पर कितनी ख़ुशी होती थी, आप की क्या भावनाएं और एहसास होते थे। इस बात का अनुमान आप इस से लगाएं कि एक बार आप स.अ.व. ने हज़रत अली रज़ि. को सम्बोधित करके फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम ! तेरे द्वारा एक आदमी का हिदायत पाना तेरे लिए उत्तम श्रेणी के लाल ऊंटों के मिलने से अधिक अच्छा है।

(सही बुख़ारी किताबुल जिहाद बस्सैर, बाब दुआउन्नबिय्ये सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इलल इस्लाम ... हदीस संख्या-2942)

यह लाल ऊंट दुनिया की सबसे अच्छी वस्तु के उदाहरण के तौर पर हैं। उस युग में लाल ऊँट बहुत बहुमूल्य वस्तु समझी जाती थी। इसलिए इस उदाहरण को सामने रखा गया। अतः फ़रमाया कि तुम्हारे द्वारा किसी का हिदायत पा जाना तुम्हें अल्लाह तआला के फ़ज़्लों का इतना अधिक वारिस बना देता है कि सांसारिक इनामों में से सबसे अच्छे इनाम की भी उसके सामने कोई हैसियत नहीं रहती।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी हार्दिक भावनाओं का नक्शा किस प्रकार खींचा है, लोगों की हिदायत के लिए अपने दर्द को किस प्रकार व्यक्त किया है, फ़रमाते हैं —

"हमारे अधिकार में हो तो हम घर-घर फिर कर ख़ुदा तआला के सच्चे धर्म का प्रचार करें और तबाह करने वाले शिर्क और कुफ्र से जो दुनिया में फैला हुआ है लोगों

को बचा लें। यदि ख़ुदा तआला हमें अंग्रेज़ी भाषा सिखा दे
तो हम स्वंय फिर कर और दौरा करके तब्लीग़ करें और
इस तब्लीग़ में जीवन समाप्त कर दें, चाहे मारे ही जाएं।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-3, पृष्ठ 291, 292 संस्करण 1985 ई. इंगलैण्ड से प्रकाशित)

इसलिए हमें इस दर्द को समझने की आवश्यकता है। आप में से यहां अधिकतर लोग तो अब जर्मन भाषा समझते हैं और दुनिया के अधिकतर देशों में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अहमदी स्थानीय भाषाएं समझते हैं। जो विभिन्न क़ौमें यहां इस देश में भी आबाद हैं वे भी जर्मन भाषा समझ लेती हैं। फिर लिट्रेचर भी उपलब्ध है, फिर कैसिटें भी उपलब्ध हैं, फिर भिन्न-भिन्न भाषाओं के उलेमा भी हमारे पास हैं उनसे भी लाभ प्राप्त किया जा सकता है। एम.टी.ए. का माध्यम है उससे भी लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यह भी तब्लीग़ में बहुत बड़ी भूमिका अदा कर रहा है। मुझे सेक्रेटरी साहिब तब्लीग़ की रिपोर्टें नियमित रूप से मिलती हैं। माशा अल्लाह अच्छा काम कर रहे हैं, परन्तु जमाअत के लोगों को इस काम में अधिक से अधिक शामिल होने की आवश्यकता है और शामिल करने की आवश्यकता है। आज हमें तलवार के जिहाद के लिए नहीं बुलाया जा रहा। हम उन लोगों को ग़लत समझते हैं जो कहते हैं कि आज भी तलवार के जिहाद की आवश्यकता है। आज धर्म के विरोधी हमें तर्कों के माध्यम से क़ायल करने की कोशिश करते हैं। हमें अन्य यत्नों एवं उपायों से क़ायल करने की कोशिश करते हैं। हमें लालचों से क़ायल करने की कोशिश करते हैं। धर्म के विरुद्ध कोई तलवार नहीं उठा रहा। आज इस्लाम से दूर ले जाने और इस्लाम में बिगाड़

पैदा करने के लिए दूसरे विभिन्न छल इस्तेमाल किए गए हैं और किए जा रहे हैं। इसलिए हमें भी हिक्मत और मौइज़्ज़त-ए-हसन के द्वारा अपने विरोधियों के मुँह बन्द करने होंगे। और इसके लिए हमारे पास जितने उपयोगी हथियार हैं किसी दूसरे धर्म के मानने वाले के पास नहीं हैं जिनसे सांसारिक लोगों के तथा केवल नाम के धार्मिक व्यक्तियों के मुँह भी बन्द किए जा सकते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को तर्कों एवं सबूतों में एक विशेष स्थान दिया गया है और जब तर्क हों तो परेशान होने की आवश्यकता नहीं होती। क्रोध में वे लोग आते हैं या परेशान होते हैं जो तर्क का सामना न कर सकें। पाकिस्तान में हमारा विरोध क्यों हो रहा है? क्यों मौलवी आम लोगों को हमारे विरुद्ध भड़काता है? क्यों ग़ैर अहमदी उलेमा हमारे उलेमा से पब्लिक़ के सामने बात करने से घबराते हैं ? क्यों हमें गालियां निकालते हैं? जबकि पवित्र क़ुर्आन तो कहता है कि हिक्मत और अच्छी नसीहत के द्वारा बात करो। इसीलिए कि उनके पास क़ुर्आनी शिक्षा के अनुसार तर्क नहीं है। परन्तु बहुत से लोग हैं जो तर्क से क़ायल होते हैं वे मौलवियों की उन कठोरताओं से तंग आए हुए हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी हमें तब्लीग़ के विभिन्न तरीके बताए हैं। आप ने फ़रमाया कि कम समझ लोग धर्म का ज्ञान भी नहीं रखते, इसलिए उन्हें समझाना थोड़ा कठिन होता है। उनको समझाने के लिए बात बहुत स्पष्ट और सब की समझ में आने वाली करनी चाहिए। अमीर लोग तो घमंड के कारण धार्मिक बातों की तरफ ध्यान ही नहीं देते और कभी उनसे बात करने का अवसर मिले तो संक्षिप्त और पूरा मतलब अदा करने वाली बात

हो। हां अधिकतर मध्यम वर्ग के लोग हैं जो बात को समझ सकते हैं और उनकी तबियत में शेखी, घमंड और कठोरता भी नहीं होती जो अमीर लोगों के स्वभाव में होती है। इसलिए उनको समझाना कठिन नहीं होता। ऐसे लोगों को अधिक तब्लीग़ करनी चाहिए और अधिक संख्या ऐसे लोगों की होती है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-3, पृष्ठ 218-219 संस्करण-1985 लन्दन से प्रकाशित)

फिर तब्लीग़ के लिए एक नुस्ख़ा यह है जो आप ने बताया कि —

"इस काम के लिए वे लोग उचित होंगे जो कि مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ (युसुफ़-91) के चरितार्थ (मिस्दाक़) हों उनमें तक़्वे (संयम) की विशेषता भी हो और सब्र भी हो। पाकदामन (सदाचारी) हों, पाप एवं दुराचारों से बचने वाले हों, लोगों की गालियों से जोश में न आएं।"

फ़रमाया —

"दुश्मन जब बातचीत में मुक़ाबला करता है तो चाहता है कि ऐसे जोश दिलाने वाले वाक्य बोले जिससे विरोधी सदस्य सब्र से बाहर हो कर उसके साथ लड़ने के लिए तत्पर हो जाए।"

(मल्फ़ूात जिल्द-9 पृष्ठ-427, संस्करण 1985 ई. लंदन से प्रकाशित)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यही फ़रमाया कि तुम्हारी नेकी की यह विशेषता होनी चाहिएँ।

फिर यह है कि थकना नहीं। ख़ुदा की तरफ बुलाने का काम एक स्थायी काम है वर्ष का एक बार का सम्पर्क पर्याप्त नहीं है बल्कि पूरे वर्ष ध्यान देने की आवश्यकता है इसके लिए यदि व्यक्तिगत संबंध बढ़ाए जाएं तो फिर ही पूरे वर्ष ध्यान रह सकता है और यह संबंध ही फिर फलदायक भी होता है। यहां भी जितनी बैअतें हो रही हैं अधिकता उन की है जिन के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क तथा व्यक्तिगत संबंध क़ायम हुए हैं और एक (लम्बे) समय तक क़ायम हुए हैं और क़ायम रहे। इसके नतीजे में बैअतें हुईं। अतः जब दर्द हो तो फिर इस प्रकार भरपूर कोशिश होती है। ये व्यक्तिगत संबंध क़ायम किए जाते हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ऐसे अहमदी हैं जो स्यवं बैअत करके अहमदी हुए और जब अहमदियत स्वीकार की तो फिर अपने निकट संबंधियों एवं दोस्तों को भी सच्चाई की तरफ बुलाने के लिए उन में एक दर्द पैदा हुआ और फिर उन्होंने उन के लिए दुआएं भी कीं और कोशिशें भी कीं। अल्लाह तआला ने उन कोशिशों को फल भी लगा दिए।

शाम के एक दोस्त अपनी तब्लीग़ की घटना वर्णन करते हुए लिखते हैं कि मेरा एक ऐसा दोस्त था जिसका धार्मिक ज्ञान तो इतना अधिक न था फिर भी वह धार्मिक दृष्टि से किसी सीमा तक कट्टर था। मैं ख़ुदा तआला से दुआ करता था कि मुझे कोई ऐसा तब्लीग़ का उपाय समझा दे जिस से यह दोस्त क़रीब आ जाए और सुनते ही क्रोधित होकर दूर न भाग जाए। मुझे विश्वास था कि यदि उसने मेरी बात ध्यानपूर्वक सुन ली और कुछ सोच-विचार किया तो अवश्य अहमदियत के तर्कों का उस पर प्रभाव हो जाएगा। कहते हैं एक दिन यों हुआ कि हम दोनों मुसलमानों की वर्तमान हालत

की चर्चा कर रहे थे कि कैसे समस्त क़ौमें इन मुसलमानों पर टूटी पड़ती हैं और मुसलमान किस प्रकार वास्तविक इस्लाम की रूह से दूर जा पड़े हैं। इन्हीं बातों के बीच उसने आचानक मुझे सम्बोधित करते हुए कहा कि यदि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन न होते तो मैं अवश्य कहता कि यह युग एक नबी के आने का युग है जिसमें लोगों का सुधार और अल्लाह की तरफ लौटना तथा उनकी शिक्षा और शुद्धिकरण (पाक करना) एक नबी के अस्तित्व के बिना संभव नहीं है। परन्तु ख़ातमुन्नबिय्यीन के बाद ऐसा होना असंभव है। उसकी यह बात सुनकर मैं समझ गया कि उसके मस्तिष्क में ख़ातमुन्नबिय्यीन का ग़लत अर्थ अटका हुआ है जिस की दुरुस्ती करने के बाद उसके लिए अहमदियत को स्वीकार करने का मार्ग आसान हो जाएगा। इस प्रकार मुझे उसके साथ बात आरम्भ करने का एक अच्छा अवसर प्राप्त हो गया। विषय मिल गया। अतः मैंने उस से कहा कि यह बात जो आप ने कही है यह सही प्रकृति (फ़ितरत) की आवाज़ है। निस्सन्देह इस युग में नबी की आवश्यकता है। क्या यह संभव है कि अल्लाह तआला इस महान् उम्मते मुहम्मदिया को उपद्रव और अज्ञानता की घाटियों में भटकता छोड़ दे और कोई दुआ न सुने तथा किसी को उसको हिदायत देने के लिए न भेजे। हरगिज़ नहीं। अतः मैं आप को ख़ुशख़बरी देता हूँ। उन्होंने अपने दोस्त से कहा कि मैं तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूँ कि अल्लाह तआला ने उसे भेज दिया है जिसकी हर नेक फ़ितरत (सलीमुलफितरत) व्यक्ति प्रतीक्षा कर रहा है। उस दयालु-कृपालु ख़ुदा ने इमाम महदी अलैहिस्सलाम को भेज दिया है ताकि इस उम्मत को नीचाइयों से निकाल कर ख़ुदा तआला की प्रसन्नता की

बुलन्द श्रेणियों तक पहुँचा दे। इस पर मेरे दोस्त ने कहा — हमें तो मौलवियों ने यही पढ़ाया है कि इमाम महदी तो नबी नहीं हैं बल्कि वह मुसलमानों के मौलवियों में से एक मौलवी होगा और रिवायत में तो आता है उसे तो मालूम ही नहीं होगा कि वह इमाम महदी है बल्कि लोग उसे कहेंगे कि आप इमाम महदी हैं और उसके न चाहते हुए उसकी बैअत कर लेंगे। कहते हैं इस बात के उत्तर में हमारे बीच बातचीत का एक लम्बा सिलसिला चलता रहा जिसमें आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ातमुन्नबिय्यीन होने के उच्च एवं बुलन्द अर्थ के स्पष्टीकरण के साथ इमाम मेहदी की नुबुव्वत के विषय में भी बड़ी लम्बी बहस हुई जिस के अन्त पर मेरे दोस्त ने सन्तुष्ट होने के बाद ख़ुदा के फ़ज़्ल से बैअत कर ली।

अतः यह परिणाम सब्र, दृढ़ता और हिक्मत के द्वारा ही निकलता है और ऐसे परिणाम बेशुमार (असंख्य) निकल रहे हैं। जब लोग तब्लीग़ करते हैं। ऐसे असंख्य उदाहरण जमाअत में मिलते हैं कि जब किसी ने एक दर्द के साथ ख़ुदा की तरफ बुलाने की कोशिश की तो उसे फल भी मिल गए।

एक अरब है, अब एक अफ्रीका है वह भी पश्चिमी अफ्रीका जहां ईसाइयत बहुत अधिक है। लाइबेरिया से हमारे मुबल्लिग़ (प्रचारक) ने लिखा — कहते हैं कि हम तब्लीग़ी टीम के साथ एक गांव मदीना गए। प्रोग्राम के अनुसार लोग एकत्र हुए पहले जमाअत का सन्देश दिया फिर बड़े अच्छे वातावरण (माहौल) में प्रश्नों का सिलसिला आरम्भ हुआ। लगता था कि प्रत्येक व्यक्ति सन्तुष्ट था कि अचानक दो कुछ पढ़े-लिखे आदमी जो अपने आप को मौलवी समझते हैं, उन्होंने मज्लिस में इस रंग में हस्तक्षेप करना

आरम्भ कर दिया कि सारा माहौल ख़राब हो गया। बढ़-बढ़ के बातें करना, माहौल को बिगाड़ना, शोर मचाना और उन का उद्देश्य भी सामयिक तौर पर (वक्ती तौर पर) तब्लीग़ के प्रभाव (असर) को समाप्त करना था। तो हमारे मुबल्लिग़ ने एक अहमदियत के ख़ादिम (सेवक) दीदात साहिब को कहा कि आप इनके प्रश्नों के उत्तर जारी रखें। कहते हैं कि मैं स्वयं यह सोचकर दुआ के लिए अलग हो गया कि प्रत्यक्ष तौर पर जो कोशिश हो सकती थी वह हम ने की है, लेकिन शैतानी विशेषता रखने वाले लोगों ने मज्लिस को ख़राब कर दिया है इसलिए यदि अल्लाह चाहे तो अवश्य ये हिदायत पा जाएंगे, क्योंकि हिदायत तो अल्लाह ने देनी है। अतः अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से यही हुआ। अगले दिन उस गांव से दो प्रतिनिधि (नुमाइन्दे) इस पैग़ाम के साथ आए कि कल की तब्लीग़ और उसके बाद की घटनाओं पर हम ने रात बहुत विचार किया है और इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि सच आपके साथ है इसलिए हम भी आपके साथ हैं। आप केवल यह बता दें कि बैअत के फार्म हमने स्वयं भरने हैं या इस उद्देश्य के लिए दोबारा हमारे गांव आएंगे। अतः ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से उस गांव में सब ने बैअत कर ली।

तो ये हैं अल्लाह तआला की व्यावहारिक गवाहियां जो इस्लाम की सच्चाई का सबूत हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का सबूत हैं कि ख़ुदा तआला जहां सब्र और बर्दाश्त की तौफ़ीक (सामर्थ्य) देता है वहां दुआओं को भी स्वीकार करता है और अपनी इस बात का भी दृश्य दिखाता है कि हिदायत अल्लाह तआला ने ही देनी है और शैतान की सम्पूर्ण कोशिशों के बावजूद हिदायत देता है। अतः अल्लाह तआला की तरफ बुलाने के लिए

अल्लाह तआला ने जो हवा चलाई है उसका हिस्सा हर अहमदी को बनना चाहिए। परन्तु हमें याद रखना चाहिए कि ख़ुदा की तरफ बुलाने वालों को जो विभिन्न तरीके अल्लाह तआला ने बताए हैं उसमें ख़ुदा की तरफ बुलाने वाले को अपनी हालत को सुधारने की तरफ भी ध्यान दिलाया है। उसे अपनी निजी हालत को बदलना है। अच्छे कर्म करने की तरफ ध्यान दिलाया है और पूर्ण आज्ञाकारी होने की ओर ध्यान दिलाया है। अतः इस दृष्टि से प्रत्येक को अपने निरीक्षण (जाइज़े) करने की आवश्यकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक जगह फ़रमाया है कि

> "इस्लाम की सुरक्षा और सच्चाई को व्यक्त करने के लिए सर्वप्रथम तो वह पहलू है कि तुम सच्चे मुसलमानों का नमूना बन कर दिखाओ और दूसरा पहलू यह है कि उसकी ख़ूबियों (विशेषताओं) और गुणों को दुनिया में फैलाओ। "

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द-8 पृष्ठ-323 संस्करण 1985 ई. लन्दन से प्रकाशित)

फिर एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नसीहत करते हुए फ़रमाया कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्वर्गवास के बाद मदीने की क्या हालत हो गई। हर एक हालत में तब्दीली है अर्थात् वही जो सहाबा थे उन में एक विचित्र ख़लबली पैदा हो गई थी और उसके कुछ समय के बाद फिर मुनाफ़िकों ने भी ज़ोर लगाना आरम्भ कर दिया। अतः इस तब्दीली को दृष्टिगत रखो। यह मदीना ही था जहां एक समय में सहाबा फिरते थे और जब हज़रत उस्मान की शहादत की घटना हुई तो वहां मुनाफिक़ों

का ज़ोर हो गया और सहाबा घरों में बन्द हो गए। आप ने फरमाया कि इस तब्दीली को दृष्टिगत रखो कि यह घटना वहां भी हो गई थी और अन्तिम समय को हमेशा याद रखो। असल बात अंजाम है। आने वाली नस्लें आप लोगों का मुंह देखेंगी और उस नमूने को देखेंगी। यदि तुम पूरे तौर पर अपने आप को शिक्षित न बनाओगे तो आने वाली नस्लों को तबाह करोगे। इन्सान के स्वभाव में नमूना परस्ती है (अर्थात् नमूना देखकर उस पर चलने की आदत है) वह नमूने से बहुत जल्दी सबक़ लेता है। एक शराबी कहे कि शराब न पियो, एक व्यभिचारी (ज़ानी) यदि कहे कि व्यभिचार (ज़िना) न करो, एक चोर दूसरे को कहे कि चोरी न करो तो इन नसीहतों से दूसरे क्या लाभ प्राप्त करेंगे। फरमाया जो लोग स्वयं एक बुराई में लिप्त होकर उसकी नसीहत करते हैं और दूसरो को भी गुमराह करते हैं, दूसरों को नसीहत करने वाले और स्वयं अमल न करने वाले बेईमान होते हैं और अपनी घटनाओं को छोड़ जाते हैं। ऐसे नसीहत करने वालों से दुनिया को बहुत हानि पहुँचती है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 6, पृष्ठ-264, संस्करण 1985 ई, लन्दन से प्रकाशित)

अतः दुनिया के सुधार की ज़िम्मेदारी हम ने उठाई है, यदि दुनिया को इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से हमने अवगत कराना है तो फिर हमें अपनी हालतों के निरीक्षण करते रहने की आवश्यकता है। ख़ुदा की तरफ बुलाने के लिए कुछ लोगों को अपने आप को प्रस्तुत करने से हम दुनिया में इस्लाम का पैग़ाम नहीं पहुँचा सकते। हज़रत मुस्लिह मौऊद रज़ि. ने एक बार जमाअत से कहा था — हर अहमदी को इस काम के लिए अपने आप को प्रस्तुत करना चाहिए और ख़ुदा की तरफ बुलाने में अपना नाम लिखवाना चाहिए।

(ख़ुतबात-ए-महमूद जिल्द-12, पृष्ठ-324,325)

और जब ऐसी हालत होगी तभी हर अहमदी को अपनी हालतों को सुधारने की तरफ भी ध्यान होगा, तभी दुनिया में इस्लाम का वास्तविक पैग़ाम (सन्देश) भी पहुँचेगा। अल्लाह तआला तो अपनी व्यावहारिक गवाहियों से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का समर्थन और सहायता कर रहा है और बहुत से लोगों के सीने खुल रहे हैं, परन्तु हमें अपने कर्त्तव्यों की तरफ ध्यान देने की आवश्यकता है।

अल्लाह तआला ने आजकल हमें तब्लीग़ की बहुत सी सुविधाएं उबलब्ध कर दी है जिन का पहले भी मैं वर्णन कर चुका हूँ। इन से हर अहमदी फ़ायदा उठा सकता है। केवल अपनी प्राथमिकताएं बदलने की आवश्यकता है ताकि दुनिया को सही मार्ग की तरफ मार्ग-दर्शन करके हम में से हर एक अल्लाह तआला के फ़ज़्लों (कृपाओं) को प्राप्त करने वाला बन सके। दुनिया को तबाही (विनाश) के गढ़े में गिरने से बचाने वाला बन सके।

अतः आज दुनिया को तबाही के गढ़े से गिरने से बचाने की ज़िम्मेदारी मसीह मुहम्मदी के ग़ुलामों की है। दुनिया को बचाना आज हमारे हाथ में है। अल्लाह तआला ने आज हमें दुनिया की रूहानी (आध्यात्मिक) प्यास बुझाने के लिए नियुक्त किया है। इसलिए इस ज़िम्मेदारी को समझने की आवश्यकता है। इस काम के लिए केवल थोड़े से लिट्रेचर या कुछ सेमीनार या कुछ मीटिंगें काम नहीं करेंगी बल्कि हमारे हर वर्ग को अपने-अपने क्षेत्र में इस काम को पूर्ण करने के लिए आगे आना होगा। दृढ़ता के साथ इस काम में तन्मय हो जाना होगा। अपने कर्मों को इस्लाम की वास्तविक शिक्षा के अनुसार ढालना होगा और ख़ुदा तआला के आगे झुकते हुए इबादत

के हक़ अदा करने होंगे। अतः हम में हर एक को यह प्रण करके यहां से जाना चाहिए कि हम दुनिया की रूहानी प्यास बुझाने के सामान करेंगे इन्शाअल्लाह। दुनिया को विनाश के गढ़े से निकालने की कोशिश करेंगे। अपने कर्मों को इस शिक्षा के अनुसार ढालने की कोशिश करते रहेंगे जो अल्लाह तआला ने हमें दी है। इन्शाअल्लाह, इन्शाअल्लाह। (बाक़ी यह तो आप इन्शाअल्लाह कहते रहे हैं और अमल करने पर आप ख़ामोश हो गए हैं) और किसी को इस बात पर अपने ऊपर उंगली नहीं उठाने देंगे कि तुम्हारे कथन और कर्म में विरोधाभास है, अल्लाह तआला के अधिकारों (हुक़ूक) की अदायगी के भी उदाहरण क़ायम करेंगे और जनता के अधिकारों की अदायगी के भी उदाहरण क़ायम करेंगे। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक प्रदान करे। अल्लाह तआला जल्से के बाद आप सब को ख़ैरियत से अपने-अपने घरों में वापस ले जाए। अब दुआ कर लें। (दुआ)

(अख़बार अल-फज़ल 21-28 अगस्त 2015 ई.)

★★★